Vol 6 Issue 2 August 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | August - 2016

GRT Golden Research Thoughts

मथुरा कला

डॉ॰ नरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक , दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय , कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

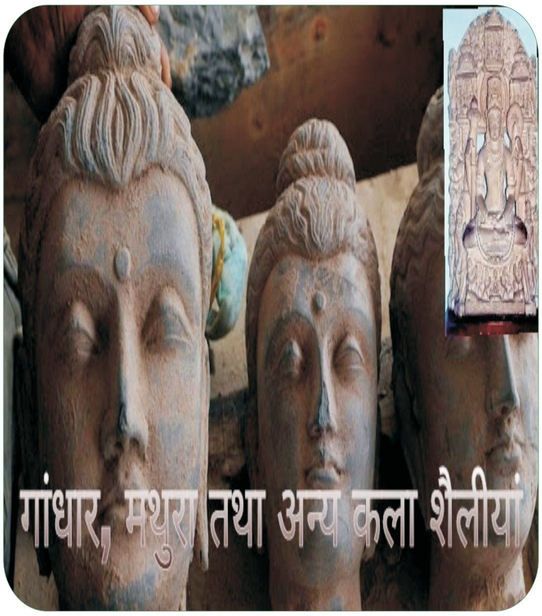

प्रस्तावना–

कला का अपना विशिष्ट महत्त्व होता है। प्रत्येक काल में कला का अपना वर्चस्व रहा है। चाहे वह हड़प्पा कालीन कला हो या मौर्य कालीन या कुषाण कालीन या अन्य कला। कुषाण शासकों का काल भारतीय मूर्तिकला की क्रियाशीलता का काल था। कुषाण शासकों के काल में ही मथुरा कला का अभ्युदय विशुद्ध भारतीय कला के रूप में हुआ है। उत्तर प्रदेश के जनपद मथुरा में इसका विकास होने के कारण इस कला को मथुरा कला की संज्ञा से अभिहित किया गया। कुषाण कालीन मथुरा कला में बुद्ध की मानव रूप में मूर्तियों का सर्वप्रथम निर्माण किया गया, जो भारतीय कला को इस युग की सर्वोत्तम देन है।

उद्‌भव एवं विकास :

मथुरा भारत के उन थोड़े से नगरों में से एक है, जहाँ कि चार धर्मों यथा ब्राह्मण, बौद्ध, जैन और लोक कला का समन्वय हुआ व इसलिए इन धर्मों से सम्बन्धित देवी–देवताओं का शिल्पांकन, जो मथुरा में विभिन्न कालों में हुआ, देखने को मिलता है।

कुषाण कालीन मथुरा कला का काल ई॰ पू॰ द्वितीय सदी से षष्ठ सदी ई॰ तक माना जाता है। इस काल में भरहुत की लोक शैली व सांची की उन्नत शैली, दोनों एक होकर उभरी, जिसके फलस्वरूप सांची की तरह इसमें आकृतियों का चपटापन नहीं है, लेकिन भरहुत के अलंकरण ज्यों के त्यों अपनाये गए हैं।[i] लगभग 400 वर्षों के अपने जीवन काल में इस कला केन्द्र में न केवल विविध प्रकार के शिल्प प्रस्तुत किए, बल्कि, बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों के लिए मूर्तियां भी निर्मित की गई।

प्राचीन काल से मथुरा एक प्राचीन स्थल माना जाता रहा है। इसके साथ ही यह उत्तरी भारत में कला का एक बहुत बड़ा केन्द्र था। कुषाण काल में शिल्प–कर्म और प्रतिमा–निर्माण के लिए मथुरा की ख्याति दूर–दूर तक हो गई थी। मथुरा के शिल्पियों की कर्मशालाएं जिस वेग से कार्य कर रही थी, निःसंदेह वह आश्चर्यजनक है। उन शिल्पियों ने सहस्रों मूर्तियों की रचना की, जिनमें से अधिकांश आज भी सुरक्षित है, परखम जैसी अति महाकाय प्रतिमाओं के निर्माण में मथुरा के शिल्पी मौर्य–शुंग युग में ही अभ्यहस्त हो चुके थे। उसी परम्परा को कुषाण युग में बोधिसत्व, बुद्ध, नाग और यक्ष देवताओं की विशालकाय मूर्तियों के निर्माण द्वारा आगे बढ़ाया गया।[ii]

मथुरा कला शनै–शनैः विकसित होती गई तथा बाहर भी मथुरा कला की मूर्तियों का निर्यात होने लगा। सांची, सारनाथ, तक्षशिला, पलवल, आगरा, कौशाम्बी, पंजाब, श्रावस्ती, राजस्थान का बैराट प्रदेश, बंगाल, अहिच्छवा एवं कोसम आदि स्थानों से मथुरा के लाल चकतेदार पत्थर की मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं। मथुरा कला में प्रयुक्त मजीठिया रंग का पत्थर मथुरा के समीप तांक्पुर, फतेहपुर सीकरी व रूपवास आदि स्थानों से मिलता था, जो मूर्ति निर्माण हेतु उपयुक्त समझा जाता था।[iii]

मथुरा कला शैली में अफगानीस्तान की तरह ही कुषाण कालीन शासकों व सामन्तों की मूर्तियां निर्मित की गई, जिससे यह आभास होता है कि मथुरा के शिल्पी इस युग की विभिन्न कलात्मक गतिविधियों से परिचित थे तथा ये शिल्पी देशी व विदेशी मूल के विभिन्न सामाजिक समूहों की मांगों को पूरा करने के प्रति जागरूक थे। इस काल में पवित्र खम्भों पर जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रांकन किया गया। वस्तुतः इस कला के शिल्पियों ने अपनी कला की प्रस्तुति के लिए अनेक विषयों के साथ–साथ प्राकृतिक दृश्यों को भी चुना।[iv]

मथुरा कला पर गांधार कला का प्रभाव था या नहीं? इस सन्दर्भ में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कनिंघम, स्मिथ आदि विचारकों का मानना है कि मथुरा कला पर गांधार कला का प्रभाव ही नहीं पड़ा, बल्कि इसकी उत्पत्ति ही गांधार शिल्प की अनुकृति है। दूसरी ओर हैवल व डॉ॰ आनन्द कुमारस्वामी ने इस शैली को पूर्णतयाः भारतीय बताया है, परन्तु मथुरा कला पर जैन व शिशुनाग शैली के प्रभाव को अवश्य स्वीकारा है।[v] मथुरा कला पर गांधार कला का काफी प्रभाव पड़ा, परन्तु इसे पूर्णतयाः गांधार कला की नकल नहीं कहा जा सकता। मथुरा के शिल्पियों ने गांधार शैली को दृष्टिगत रखकर एक मौलिक शैली का अविष्कार किया था। यह विशुद्ध रूप से भारतीय थी।[vi] दूसरी ओर कनिष्क के शासन काल में मथुरा का अभ्युदय विशुद्ध भारतीय कला के रूप में हुआ। प्रारम्भ में वैदेशिक इतिहासविदों ने मथुरा कला का उद्‌भव गांधार कला के प्रभाव से ही माना, परन्तु अब विषय और कला का अनुशीलन हो जाने के उपरान्त यह निश्चित हो गया कि मथुरा कला की मूर्तियाँ गांधार कला के प्रभाव से शून्य है। मथुरा कला को जन्म देने का श्रेय भरहुत और सांची की कलाओं को है। अनेक विद्वानों ने मथुरा कला का अस्तित्व गांधार कला के जन्म से पूर्व ही स्वीकार किया है। मथुरा की इमारतें विशेषकर शुंग और विदेशी शैलियों के प्रभाव को प्रदर्शित करती है, जैसेः– यूनानी नमूनों के कुछ उदाहरण रोमन भित्ति स्तम्भ व कुछ खम्भों आदि पर पड़ा है। इस काल में दरवाजों का ढांचा रोमन था, परन्तु

उनकी बारीकियाँ उन्हें भारतीय दर्शाती है।[vii]

विशेषताएं :

मथुरा की कला का आकर्षण भौतिक क्षेत्र में भी उतना ही चमत्कारपूर्ण है, जितना आध्यात्मिक क्षेत्र में। निष्कर्षतः मथुरा कला की निम्नवत् विशेषताएं है :

1. मथुरा की मूर्तियाँ लाल बलुए पत्थर की बनी है।
2. मथुरा कला की मूर्तियों में बुद्ध के मुख के चारों ओर प्रभामण्डल है।
3. महात्मा बुद्ध मुण्डित शीश तथा दाढ़ी–मूँछ विहीन दिखाए गए हैं।
4. मूर्तियों में आध्यात्मिकता की अपेक्षा भौतिकता की प्रधानता है।
5. मूर्तियों के वस्त्र प्रायः शरीर से चिपटे हुए हैं।
6. महात्मा बुद्ध की मूर्तियां सिंहासनासीन भी हैं तथा खड़ी मुद्रा में भी।
7. यक्ष तथा यक्षियों की मूर्तियों में कामुकता का अतिरेक है।[viii]
8. मूर्तियां पृष्ठ से उभरी हुई हैं, इसी वजह से पूर्वकालीन मूर्तियों में, जो चपटेपन का आभास था, वह कुषाण काल में समाप्त हो गया था।
9. प्रारम्भिक काल की मूर्तियों की स्थूलता के स्थान पर देह को सुडौल एवं मांसल दिखलाया गया है।
10. वस्त्र संरचना में भारी वस्त्रों के स्थान पर हल्के व सुरूचिपूर्ण वस्त्र पहनाये गए हैं।
11. एक कथा की विभिन्न घटनाओं को अब अलग–अलग चौखटों में बनाया जाने लगा था।
12. देव–प्रतिमाओं के दाहिने कन्धे पर वस्त्र नहीं है व दाहिना हाथ अधिकतर अभय मुद्रा में बनाया गया है।[ix]

मथुरा कला के विविध आयाम :

कुषाण काल में मथुरा कला के अनेक चित्र दृष्टिगोचर होते हैं। कुषाण राज्य अरब सागर से लेकर गंगा तट तक फैला हुआ था। इन शासकों का काल भारतीय मूर्तिकला की क्रियाशीलता का काल था। इस युग में धार्मिक मत–मतान्तरों के आधार पर मूर्तियां बहुत अधिक संख्या में बनी। बुद्ध, बोधिसत्व, मैत्रेय, अवलोकितेश्वर, विश्वपाणि, पार्श्वनाथ, आदिनाथ व नेमिनाथ आदि तीर्थंकर, सूर्य, शिव, विष्णु इन्द्र, अग्नि, महिषामर्दिनी, दुर्गा, अर्धनारीश्वर, गणेश व कार्तिकेय आदि पौराणिक देवी–देवताओं की मूर्तियां प्रचुर संख्या में निर्मित हुई। इस काल की यक्षों की भी अनेक मूर्तियाँ मथुरा संग्रहालय में है। कहा जाता है कि भारत में यक्ष पूजा का प्रचलन आर्येत्तर प्रभाव के कारण आरम्भ हुआ। धार्मिक सम्प्रदायों से सम्बन्धित मूर्तियों के अतिरिक्त श्रृंगार तथा अन्य भावों की अभिव्य×जना करने वाली मूर्तियों की रचना भी काफी अधिक संख्या में हुई थी। इस युग की युवतियों की मूर्तियों के शरीरों पर विविध प्रकार के अलंकरण और वस्त्र है।[x]

कुषाण काल में मथुरा कला तीन भागों में विभक्त थी – जैन कालीन, बुद्ध कालीन एवं ब्राह्मण धर्म। इन तीनों में से सिर्फ ब्राह्मण धर्म में ही मूर्ति पूजा के समर्थक थे, बाकि दो समुदाय इसके विरोधी थे। जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे मनुष्य को भी आश्रय की जरूरत महसूस हुई, इसलिए जैनियों ने भी भक्ति केन्द्र स्थापित किए। इस समुदाय के भी भक्ति चिन्ह प्राप्त हुए हैं, जैसे – चैत्य स्तम्भ, चैत्य वृक्ष, आठ मांगलिका चिन्ह, स्तूप व धर्मचक्र। बौद्ध धर्म ने भी अपने इसी प्रकार के चिन्ह बनाए थे, जिनमें असनिसा, भिक्षापात्र, वज्रासन व कर्ण चिन्ह आदि सम्मिलित थे। यह एक आश्चर्यजनक बात है कि केवल मथुरा कला में ही प्रभा मण्डल का प्रयोग किया गया। इस काल में इन चिन्हों की जगह मानव रूप में निर्मित मूर्तियों ने ले ली थी। धीरे–धीरे तीनों समुदायों में मूर्ति पूजा की जाने लगी।[xi] इस काल की कला में बुद्ध की मानव रूप में मूर्तियों का सर्वप्रथम निर्माण किया गया, जो भारतीय कला को इस युग की सर्वोत्तम देन है।

कुषाण कालीन मथुरा कला में कुषाण शासकों की भी मूर्तियां बनाई गई थी। जो अधिकांश पास के 'माट' नामक ग्राम से मिली हैं, जहाँ निःसंदेह राजाओं का शीतकालीन निवास था, जिसके एक पूजागृह में भूतपूर्व राजाओं की स्मृति आदर के साथ की जाती थी। लगभग ये समस्त मूर्तियाँ बाद के शासकों द्वारा तोड़ डाली गई थी और इन सभी में महत्त्वपूर्ण महान कनिष्क की मूर्ति दुर्भाग्य से शीश रहित है। मध्य एशिया की पोशाक एक लम्बा कोट और गद्देदार जुते पहने हुए, एक हाथ में तलवार और दूसरे में ढाल लिए हुए राजा अपने दोनों पैरों को अलग किए हुए प्रभुत्व की मुद्रा में खड़ा है।[xii]

बुद्ध मूर्तियाँ :

कुषाण कालीन मथुरा कला में बुद्ध को मानव रूप में दिखाया गया है, जबकि कुषाण युग से पूर्व कला में बुद्ध को मानव रूप में न दिखाकर प्रतीकों के माध्यम से दिखाने की परम्परा थी, जो उनके जीवन पर आधारित थी। कुषाण काल में बौद्ध प्रतिमा स्थानक व आसन दोनों ही मुद्राओं में बनी है। स्थानक मुद्रा का आधार पूर्व प्रचलित यक्ष प्रतिमाएं एवं आसन मुद्रा का आधार योगी माना जाता है। बुद्ध प्रतिमाओं की अन्य विशेषताओं में पद्मासन लगाए बुद्ध जिनका दाहिना हाथ अभय मुद्रा में व बायां हाथ घुटने पर रखा है। हथेली और तलवों पर धर्म चक्र व त्रिरत्न, बुद्ध आसन की पीठिका के नीचे बैठा हुआ सिंह व खड़ी बुद्ध प्रतिमाओं में पैरों के नीचे बैठा सिंह बनाये गये हैं। वहीं बुद्ध प्रतिमाओं में चपटी नाक, चौड़े मुख–मण्डल व सुडौल एवं भारी शरीर का निर्माण हुआ है।[xiii]

मथुरा कला के अन्तर्गत निर्मित मूर्तियों में गौतम बुद्ध के जीवन की सात घटनाओं को प्रदर्शित किया गया है। सातों घटनाएं इस प्रकार हैं – बुद्ध का जन्म, बुद्ध को बोधिसत्त्व की प्राप्ति, धर्म प्रचार, महापरिनिर्वाण, इन्द्र को भगवान बुद्ध का दर्शन, बुद्ध द्वारा त्रयत्रिंश स्वर्ग से माता को ज्ञान देकर वापिस आना, लोकपालों द्वारा बुद्ध को भिक्षापात्र अर्पित करना। मथुरा कला में बुद्ध को दाढ़ी–मुंछ विहिन दिखाया गया है, जिसे हम अवतारवादी भारतीय कला एवं संस्कृति का ही प्रभाव कह सकते हैं। मथुरा कला की कुषाण कालीन मूर्तियों में बुद्ध के दाहिने कंधे पर वस्त्र नहीं दिखलाई पड़ता। बुद्ध का दक्षिण हस्त कुछ ऊपर को उठा हुआ दिखाया गया है, जो अभय मुद्रा का प्रदर्शक है। मथुरा कला की बुद्ध मूर्तियों में सिंहासनासीतता की प्रधानता रही है।[xiv]

पश्चिमी विद्वानों के मतानुसार बुद्ध की मूर्ति कुषाण काल की गांधार कला में सर्वप्रथम देखने को मिली, परन्तु भारतीय विद्वानों के मतानुसार, यह कला मथुरा के कलाकारों अर्थात् मूर्तिकारों द्वारा सर्वप्रथम निर्मित की गई थी। ईसा की पहली शताब्दी पूर्व मथुरा कला की बुद्ध

मूर्तियों में बुद्ध की पूजा हेतु दीये, फूल, चन्दन, लेप, धूप देकर सुगन्धित करना, झण्डे व छाते अर्थात् छतरी का प्रयोग दिखाया गया है। [xv]

मथुरा कला की बुद्ध प्रतिमाओं में बुद्ध विशाल और अत्यन्त बलिष्ठ दिखाई पड़ते हैं। इन मूर्तियों में कड़ापन, कठोर आकृति और दक्षता का अनुभव होता है। इस क्षेत्र में सबसे पहली प्रमाणिक बुद्ध की प्रतिमा सारनाथ की हैं, जिसका समय शक काल 3 (अर्थात् 81 ई॰) है। यह मथुरा के लाल पत्थर की बनी है और कुषाण कला की हू–ब–हू नकल है। मथुरा के भिक्षु 'बल' ने यह मूर्ति प्रतिष्ठित की थी और यह मथुरा के शिल्पियों द्वारा निर्मित है। सारनाथ के पश्चात् भिक्षु 'बल' द्वारा ही प्रतिष्ठित श्रावस्ती की बुद्ध प्रतिमा है, जिसका समय शक काल 19 (अर्थात् 97 ई॰) है। सांची में प्राप्त बुद्ध–मूर्ति वासिष्क के 28वें वर्ष अर्थात् 106 ई॰ की है। ये सभी मूर्तियाँ मथुरा के लाल पत्थर की बनी है। बुद्ध की सबसे प्राचीन मूर्ति बोधगया में मिली है, जिसका समय 64 (संवत) है और 'त्रिकमल' नामक नागरिक की देन है। यह भी मथुरा के लाल पत्थर की बनी है। कनिंघम के अनुसार, यह तिथि सेल्यूकस संवत की है और इस मूर्ति का समय द्वितीय सदी का मध्य काल है। इस मूर्ति में शाल दोनों कन्धों को ढके हुए वक्ष स्थल के दोनों ओर फैला है। मथुरा शैली की अंतिम तिथियुक्त मूर्ति कटरा में मिली है, जिसका समय शक संवत 98 (अर्थात् 176) है। इसमें मूर्ति का सिर घुटा है। [xvi]

जैन मूर्तियाँ :

जैन धर्म भारतीय पटल पर अपना अति विशिष्ट स्थान रखता है। प्रथम शती ई॰ के आरम्भिक काल से ही जैन तीर्थकारों की मूर्तियों का निर्माण होने लगा था। जैन धर्म के एक केन्द्र के रूप में मथुरा का महत्त्वपूर्ण स्थान था। यहाँ पर कंकाली टीले के उत्खनन के परिणाम–स्वरूप जैनियों के एक विशाल स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए हैं। स्तूप के अवशेषों में प्राप्त आयागपट्टों का शिल्प की दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व है। यह आयागपट्ट एक प्रकार का प्रस्तर–खण्ड होता था, जिस पर तीर्थकारों की या अन्य पूज्य आकृतियाँ उत्कीर्ण होती थी। जैन कला के अन्तर्गत इन आयागपट्टों का निर्माण ईसवी शती के आरम्भ होने से पूर्व ही होने लगा था। आरम्भ में इन प्रस्तर खण्डों पर पवित्र चिन्ह बनाये जाते थे, परन्तु बाद में चलकर तीर्थंकारों की आकृतियां इस पर निर्मित की जाने लगी और अर्हतों की पूजा के लिए इन अलंकृत प्रस्तर–खण्डों को मंदिर में रखा जाने लगा। प्रथम शती ई॰ में मथुरा की कला में जैन धर्म के 24 तीर्थंकारों की स्वतंत्र प्रतिमाओं का भी निर्माण होने लगा था। स्वतंत्र रूप से निर्मित इन तीर्थंकारों की मूर्तियों को दो ढंग से बनाया गया – 1.एकाकी रूप में 2.सर्वतोभद्रिका रूप में।[xvii] बाद में इन दोनों को भी दो रूपों में प्रदर्शित किया गया है – स्थानक रूप में, जो कायोत्सर्ग (नग्न) मुद्रा में है और आसन रूप में, जो ध्यान मुद्रा में है। [xviii]

जैन देवता तीर्थंकर या 'जिन' कहलाते हैं। तीर्थंकर की संख्या 24 है। मथुरा कला में आदिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर आदि तीर्थकरों की मूर्तियाँ मिली हैं, जो प्रायः पदमासन में बैठी है। कुछ खड़ी हुई (खड्गासन में) ऐसी भी कई प्रतिमाएं मिली हैं, जिनमें चारों दिशाओं में से प्रत्येक में एक–एक तीर्थंकर मूर्ति बनी है। ऐसी प्रतिमाओं को 'सर्वतोभद्रिका' कहते हैं। मथुरा संग्रहालय में बी॰ 1, 67, बी॰ 68 तथा बी॰ 4 संख्यक सर्वतोभद्रिका प्रतिमाएं विशेष उल्लेखनीय हैं। [xix] मथुरा संग्रहालय की बी॰ 32 संख्यक प्रतिमा (फलक 140) कायोत्सर्ग व स्थानक मुद्रा में 'जिन' मूर्ति का प्रारम्भिक स्वरूप प्रदर्शित करती है, जो चौमुखी प्रतिमाओं में भी मिलता है।[xx] मथुरा संग्रहालय की बी॰ 71 में चौमुखी प्रतिमा है, जिस पर चार दिशाओं में खड़े हुए चार 'जिन' दिखाये गये हैं। तीन में मस्तक के पीछे तेजराशी और एक में फण है। सभी के वक्ष–स्थल पर 'श्रीवत्स' का चिन्ह है। चारों चौंकियों पर उपासना करते श्रावक–श्राविका है और एक लेख पंक्ति है, जो कुषाण संवत के पाँचवें वर्ष अर्थात् 83 ई॰ की है। [xxi]

हिन्दू धर्म से सम्बंधित मूर्तियां :

ब्राह्मण धर्म से सम्बंधित मूर्तियां भी मथुरा से प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार की आरम्भिक मूर्तियों में शिव, लक्ष्मी, सूर्य और बलराम उल्लेखनीय है। कुषाण काल में कार्तिकेय, विष्णु, कुबेर, सरस्वती और अन्य देवताओं की मूर्तियां बनाई जाती थी। इस काल की मूर्ति विद्या की यह विशेषता है कि प्रत्येक देवता अलग से पहचाने जा सकते हैं, जैसे–शिव को लिंग के रूप में पूजा जाता है। प्रथम शती ई॰ पू॰ में मथुरा से प्राप्त अभिलेख में वासुदेव, संकर्षण और पंचवीरों के देवगृह तथा उनकी पूजा का उल्लेख प्राप्त होता है। मथुरा के समीप एक स्थान से बलराम की एक मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसका समय द्वितीय शताब्दी स्वीकार किया जाता है। वर्तमान में यह मूर्ति लखनऊ संग्रहालय में सुरक्षित है। [xxii]

विष्णु मूर्ति :

मथुरा से विष्णु की कुषाण कालीन कई मूर्तियाँ ऐसी मिली है जैसी कि भारत में अन्यत्र प्राप्त नहीं होती। 933 संख्यक चतुर्भुजी विष्णु मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है, इसकी निर्माण शैली प्रारम्भिक कुषाण कालीन बोधिसत्व प्रतिमाओं से बहुत मिलती है। विष्णु का एक हाथ अभय मुद्रा में और दूसरे में वे अमृतघट लिए है, शेष दो हाथों में गदा तथा चक्र हैं। इस प्रकार यहाँ विष्णु के साथ केवल दो आयुध है, लेकिन बाद में शंख तथा पद्म मिलने लगते हैं। एक दूसरी मूर्ति (सं॰ 2520) में भी विष्णु के ऐसे ही रूप का चित्रण है, जिसमें उन्हें बोधिसत्व मैत्रेय के समान अंकित किया गया है। विष्णु की कुषाण कालीन दो अष्टभुजी मूर्तियाँ भी मथुरा कला में मिली है। (सं॰ 1010 तथा 3520), जो मूर्ति विज्ञान की दृष्टि से बड़े महत्त्व की है। विष्णु की कुछ मूर्तियों में गरुड़ को भी विष्णु के साथ दर्शाया गया है। [xxiii]

शिव की मूर्ति :

कुषाण काल में शिव की अनेक मूर्तियां मिली हैं। शिवलिंग व मुखलिंग स्तूपों का अंकन भी हुआ है। कुषाण शासकों के सिक्कों पर नन्दी पर बैठे कई मुखों वाले भगवान शिव की आकृतियां बनी है। इसमें शिव के दो रूप बने हैं – एक लिंग रूप में व दूसरा मानव रूप में। लिंग रूप में निर्मित शिव की अनेक मूर्तियां लखनऊ व मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है। [xxiv] शिव लिंग की जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, वह बड़े रूप में तथा अधिकतर पीपल के पेड़ के नीचे दशाई गई हैं। शिव की मानव रूप में जो मूर्तियाँ मिली हैं, वह विम कैडफिश, कनिष्क व वासुदेव के सिक्कों पर दिखाई पड़ती है। मथुरा से प्राप्त शिव की मूर्तियों में शिव के बालों का जुड़ा बना है, उनकी तीसरी आँख व उनकी सवारी बैल को भी दर्शाया गया है। कुषाण काल में शिव के साथ उनकी पत्नी पार्वती को भी अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शाया गया है। कुषाण कालीन शिवलिंग में शिव का चेहरा तथा उनकी तीसरी आँख भी देखने को मिलती है। [xxv]

सूर्य मूर्ति :

कुषाण काल से पूर्व भारतीय परम्परा में सूर्य मूर्तियों का निर्माण मानव रूप में होता था, लेकिन कुषाण काल में ईरानी प्रभाव तथा कुषाणों के संरक्षण में सूर्य मूर्तियाँ एक नये ढंग में बनाई गई। मथुरा कला में ईरानी परम्परा में निर्मित सूर्य मूर्तियों में सूर्य को लम्बा कोट, पैजामा, और बूंट धारण किए हुए दो या चार अश्वों से जुते हुए रथ पर सवार प्रदर्शित किया गया है। सूर्य के हाथों में तलवार और कमल का प्रदर्शन किया गया है। मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित अनेक कुषाण कालीन सूर्य मूर्तियों में सूर्य को उदीच्य वेश में प्रदर्शित किया गया है। मथुरा की प्राचीन कुषाण कालीन मूर्तियों में एक मूर्ति विशेष दर्शनीय है, जिसमें सूर्य चार अश्वों से जुते हुए एक चक्र वाले रथ पर आरूढ़ है, उनके दायें हाथ में कमल कलिका और बायें हाथ में एक छोटी सी खड़ग है। उनके पीछे दिव्यता सूचक प्रभामण्डल है और वे चोलक तथा बूंट धारण किए हुए है। इस मूर्ति की महत्त्वपूर्ण विशेषता सूर्य के कन्धों पर एक–एक पखं का प्रदर्शन है। सम्भवतः सूर्य के आकाश भ्रमण की कल्पना को मूर्त रूप देना शिल्पी को अभीष्ट प्रतीत होता है। दूसरी ओर इस मूर्ति में ईरानी परम्परा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सूर्य मूर्तियों के प्रदर्शन से स्पष्ट हो जाता है कि कुषाण कालीन मथुरा की कला में निर्मित मूर्तियाँ विदेशी प्रभाव से प्रभावित हैं। [xxvi]

संकर्षण बलराम मूर्ति :

मथुरा में एक मूर्ति बलराम की प्राप्त हुई है, जिसके हाथों में हल और मूसल प्रदर्शित किया गया है तथा उसके सिर के ऊपर सर्प–फण का छत्र है। कुषाण काल में निर्मित बलराम की मूर्तियों का दाहिना हाथ अभय मुद्रा में तथा बांए हाथ में चषक है। संकर्षण एक तरफ लोकधर्म के देवता हैं और दूसरी तरफ विष्णु के अवतार के रूप में भागवतों के देवता हैं। बलराम का वेश यक्ष मूर्तियों के समान है अर्थात् सिर पर भारी पगड़ी, कानों में कुण्डल, कन्धों पर उत्तरीय और नीचे अधोवस्त्र है, जिसकी तिकोनी पट्टी टांगों के बीच में लटकती हुई दिखाई गई है। बलराम की मूर्तियाँ न केवल सर्प फणों से बल्कि दायें हाथ में गृहीत चषक से भी सूचित होती है। प्रथम शती ई॰ पू॰ की एक बलराम की मूर्ति का उल्लेख कल्पना देसाई ने किया है, जो बनारस के आदिकेश्वर घाट से प्राप्त हुई है और भारत कला भवन, काशी में सुरक्षित है। मथुरा संग्रहालय में संग्रहीत बलराम मूर्तियों में उन्हें खड़े रूप में दिखाया गया है। [xxvii]

गणपति मूर्ति :

कुषाण काल से गणेश की असंदिग्ध मूर्ति अभी तक नहीं मिली है। आरम्भ में गणेश यक्ष श्रेणी के देवता था। उस रूप में उनका अंकन मथुरा और अमरावती की कला में हुआ है, धीरे–धीरे हाथी के मस्तक वाला यक्ष देवता देव मूर्ति के रूप में परिवर्तित हो गया था। [xxviii] इनकी मूर्तियों का निर्माण कुषाण कालीन मथुरा कला में होने लगा था। [xxix]

कार्तिकेय मूर्ति :

कुषाण काल में कार्तिकेय की पूजा अत्यन्त लोकप्रिय थी, क्योंकि वे एक युद्ध देवता के रूप में प्रतिष्ठित थे। मथुरा कला में कार्तिकेय को द्विभुजी दिखाया गया है। उसका दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है और बायां शक्ति लिए है। मथुरा में कार्तिकेय की एक खड़ी हुई मूर्ति मिली है, जो बिल्कुल बोधिसत्व जैसी है। इस मूर्ति की चौंकी पर कार्तिकेय का नाम दिया है। मथुरा से प्राप्त कार्तिकेय की एक खड़ी मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। [xxx]

इन्द्र मूर्ति :

मथुरा कला में इन्द्र की कई कुषाण कालीन मूर्तियां मिली है। मथुरा संग्रहालय की 392 संख्यक इन्द्र मूर्ति कला की अद्भुत कृति है। यह कुषाण काल के प्रारम्भ की है। इसमें हाथ में वज्र धारण किए इन्द्र खड़े हैं। उनके दोनों कन्धों से नाग मूर्तियाँ निकल रही है। इन्द्र के सिर पर ऊंचा किरीट मुकुट है। इन्द्र की एक दूसरी मूर्ति भी मिली है, जो विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें इन्द्र को अभय मुद्रा में खड़े हुए दर्शाया गया है। इसमें उनका वाहन ऐरावत हाथी भी है। राजगृह की इन्द्रशैल गुहा में तपस्या करते हुए बुद्ध के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए ऐरावत सहित आए हुए इन्द्र की कई मूर्तियाँ मिली है।[xxxi] एक विशेष मूर्ति में इन्द्र को बहुशीर्षक दिखाया गया है। इन्द्र के मस्तक पर शूर्पाकृति मुकुट है, जो मथुरा कला में उसका विशेष लक्षण है। इस मूर्ति की पहचान इन्द्र के पचेन्द्र स्वरूप से की जा सकती है। इन्द्र प्रतिमाओं में कभी–कभी माथे पर तीसरा नेत्र भी दिखाया गया है। [xxxii]

कुबेर मूर्ति :

कुषाण काल के लोक जीवन में कुबेर पूजा का विशेष महत्त्व है। मोटे पेट वाले तथा सुरापान में प्रवृत भव्य आकृति के कुबेर सुन्दरियों से घिरे है। सेवक इनको सहारा दे रहे है। सभी की वेश–भूषा ईरानी है। सम्भवतः यह दृश्य आपान गोष्ठी का है।[xxxiii] मथुरा कला की एक मूर्ति में कुबेर को अपने एक हाथ में चषक और दूसरे हाथ में धन की थैली लिए हुए, लम्बे और निकले हुए उदर वाले सेठ के रूप में दर्शाया गया है। कुछ चित्रों में कुबेर को अपनी सहचरी हारिती के साथ भी दर्शाया गया है। एक लघु शिला–फलक पर कुबेर को विष्णु, शिव और गजलक्ष्मी के साथ भी दिखाया गया है। [xxxiv]

नाग मूर्ति :

मथुरा कला में नागराज की मूर्तियों का भी निर्माण किया गया था। छड़गाँव से मिली विशाल नागमूर्ति के कानों में कुण्डल और कमर में करधनी को प्रदर्शित किया गया है। [xxxv]

यक्ष, किन्नर, गन्धर्व आदि की मूर्तियाँ :

मथुरा कला में यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, सुपर्ण तथा अप्सराओं की अनेक मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं। ये सुख–समृद्धि तथा विलास के प्रतिनिधि

हैं। संगीत, नृत्य और सुरापान इनके प्रिय विषय हैं। यक्षों की प्रतिमाएं मथुरा कला में सबसे अधिक मिली हैं। इनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण 'परखम' नामक गांव से प्राप्त लगभग 200 ईसवी पूर्व की विशालकाय यक्षमूर्ति (सी॰ 1) है। ऐसी ही एक दूसरी बड़ी मूर्ति मथुरा के बड़ौदा गांव से प्राप्त हुई है। ये मूर्तियाँ कोरकर बनाई गई हैं, जिससे उनका दर्शन चारों ओर से हो सके। मथुरा कला में यक्षियों का चित्रण बहुत मिलता है। इनके अतिरिक्त पूज्य प्रतिमाओं के साथ या विविध अलंकरणों के रूप में किन्नर, गंधर्व, सुपर्ण व विद्याधर आदि भी मिलते हैं। [xxxvi]

देवियों की मूर्तियाँ :

मथुरा कला में शक्ति रूपा देवियों की मूर्तियाँ भी निर्मित की गई थी। लक्ष्मी (सं॰ 2520), सरस्वती (सं॰ डी॰ 57), पार्वती (सं॰ 1044), महषिमर्दिनी (सं॰ 541), सिंहवाहिनी दुर्गा (सं॰ 1783), सप्तमातृका (सं॰ 2872, एफ॰ 38 एवं एफ॰ 41) तथा गंगा–यमुना (सं॰ 1507, 2659) आदि अनेक कलापूर्ण मूर्तियाँ मिली हैं।[xxxvii] कुषाण कालीन मथुरा कला में लक्ष्मी को कमल के आसन पर और कभी लता के मध्य में प्रदर्शित किया गया है। मथुरा से प्राप्त लक्ष्मी की एक अतीव मोहक मूर्ति का उल्लेख अग्रवाल महोदय ने किया है, जिसमें दैवी को दुद्धाधारिणी मुद्रा में घट के ऊपर खड़े प्रदर्शित किया गया है। मथुरा कला में दुर्गा की मूर्ति को चतुर्भुजी दिखाया गया है। कुषाण काल में दुर्गा की महिषासुरमर्दिनी रूप की मूर्तियां अधिक लोकप्रिय हो गई थी। कुषाण कालीन दुर्गा की महिषासुरमर्दिनी रूपी मूर्तियां वर्तमान में मथुरा संग्रहालय में संरक्षित है। एक चित्र शिशु अधिष्टात्री देवी हारिती को कुबेर के पार्श्व में प्रदर्शित किया गया है। [xxxviii]

सम्राटों की मूर्तियाँ :

कुषाण कालीन मथुरा कला में सम्राटों की विशालकाय मूर्तियों को भी निर्मित किया गया था। इन मूर्तियों में सम्राटों के शाही वैभव, सत्ता एवं गरिमा की पूर्ण अभिव्यंजना हुई है। कुषाण सम्राट कनिष्क की लगभग 5 फुट 7 इंच ऊँची मस्तकहीन खड़ी मूर्ति 'माट' ग्राम के टोकरी टीले से मिली है। इस मूर्ति में राजा को घुटने से नीचे तक लम्बा कोट और पैरों में भारी गद्दीदार जूता पहने हुए प्रदर्शित किया गया है। राजा अपने दायें हाथ में गदा और बायें हाथ में तलवार की मूठ पकड़े हुए है। तलवार के मूठ पर हंस की आकृति और म्यान पर तीन पदकों का अलंकरण है। वेन्जामिन रोलैंड के अनुसार, यह एक शाही पोशाक थी, जिसे कुषाण शासकों द्वारा ठंडे देशों से भारत में लाई गई थी। इस मूर्ति के नीचे "महाराजा राजाधिराज देवपुत्रों कनिष्कों" लिखा है। यह मूर्ति युद्ध के रूप में है। [xxxix]

वेदिका स्तम्भों का शिल्प :

मथुरा से प्राप्त बहुसंख्यक कला अवशेषों में वेदिका स्तम्भों का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सांची और भरहुत की कला को आगे बढ़ाते हुए मथुरा के शिल्पी ने अनेक जैन व बौद्ध स्तूपों का निर्माण किया था, जो अब नष्ट हो चुके हैं, लेकिन अब तक लगभग 150 अलंकरण युक्त वेदिका स्तम्भ कंकाली टीला, भूतेश्वर आदि स्थानों से प्राप्त हो चुके हैं, जो कभी स्तूप के अंग रहे होंगे। इन वेदिका स्तम्भों पर कुछ पर पूजा सम्बंधी, कुछ पर कथाओं का दृश्य तथा कुछ पर आनन्दमय लोक जीवन से सम्बन्धित दृश्य उत्कीर्ण किए गए हैं। इन वेदिका स्तम्भों पर मथुरा के शिल्पी द्वारा नये–नये दृश्य दिखाने के लिए विविध आकर्षक मुद्राओं में नारियों का सुभग और ललित चित्रण किया गया है। मथुरा में शालभंजिकाओं की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पुष्पित शाल वृक्ष की शाखा को तोड़कर उस पर प्रहार करने का खेल नारियों में अधिक लोकप्रिय हो गया था। भरहुत और सांची में शालभंजिकाओं को अनेक रूप में तथा विभिन्न मुद्राओं में प्रदर्शित करना आरम्भ कर दिया था। मथुरा कला के इन वेदिका स्तम्भों पर उत्कीर्ण कुछ आकृतियाँ क्षैत्रियता से भी प्रभावित है। एक वेदिका स्तम्भों पर कलाकार ने सिर पर एक भाण्ड रखे हुए नारी को प्रदर्शित किया गया है, जो दही बेचने वाले गोपी की रूपांकन प्रतीत होती है। कुछ खड्ग्धारी नारियों का भी अंकन है। ऐसा प्रतीत होता है कि राजमहलों में रहने वाली रानियों की परिचारिकाओं को शिल्प द्वारा मूर्त रूप दिया गया है।[xl] कहीं कोई युवती उद्यान में फूल चुन रही है, कोई कन्दुक क्रीड़ा में लग्न है (जे॰ 61), कोई अशोक वृक्ष को पैरों से ताड़ित कर रही है (सं॰ 2325) या निर्झर में स्थान कर रही है या स्थानोपरान्त तन ढक रही है (जे॰ 4), कोई सुन्दरी स्नानागार से बाहर निकलती हुई अपने बाल–निचोड़ रही है और नीचे हंस पानी की उन बुंदों को मोती समझकर अपनी चोंच खोले खड़ा है (सं॰ 1509)। इनके अतिरिक्त अनेक प्रकार के पशु–पक्षी, लता–फूल आदि भी इन स्तम्भों पर उत्कीर्ण किए गए हैं। ये वेदिका स्तम्भ श्रृंगार और सौन्दर्य की जीती–जागती कृतियाँ हैं, जिन पर कलाकारों ने प्रकृति तथा मानव जगत की सौन्दर्य राशी रूपायित कर दी है। [xli]

प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला :

कथावस्तु की दृष्टि से कुषाण कालीन मथुरा के शिल्पी ने अनेक सम्प्रदायों से सम्बन्धित प्रतिमाओं को उत्कीर्ण किया है। जैन, बौद्ध, ब्राह्मण आदि सम्प्रदायों से सम्बन्धित अनेक प्रतिमायें मथुरा की कला से प्राप्त हुई हैं। बोधिसत्व में मैत्रेय, अवलोकितेश्वर, कश्यप, बुद्ध की मूर्ति, यूनानी देवता बाक्स की आपानगोष्ठी, नीमिया के सिंह से कुश्ती करता हुआ हेराक्लीज, जीयस के गरुड़ द्वारा गेनीमीडी का हरण, मालाधारी देवों का अलंकरण आदि दृष्टिगोचर होते हैं। इन विविध प्रकार की प्रतिमाओं में से कुछ प्रतिमाओं के चेहरे पर मुँछे हैं। छाती पर जनेऊ की तरह रक्षासूत्र या ताबीज तथा पावों में यूनानी ढ़ग की चप्पल पहने है। भारतीय परम्परा के अनुसार, बुद्ध के चेहरे पर मुँछें कभी नहीं दिखाई जाती। यह लक्षण ईरान की मूर्तियों से लिया गया है। ताबीजी माला भी ईरानी या पश्चिमी परम्परा से ली गई थी। बौद्ध धर्म में तांत्रिक प्रभाव के आगमन से बुद्ध मूर्तियों के साथ भी ऐसे ताबीजों का संबंध आवश्यक माना जाने लगा। [xlii]

उपसंहार :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कुषाण युगीन कला–कृतियों का अपना विशिष्ट महत्त्व है। मथुरा कला–कृतियों का भारतीय कला–कृतियों में अद्वितीय स्थान है। भारतीय कला के अनेक अलंकरण, उपमान और शिल्प विधान निर्धारित करने का गौरवशाली श्रेय मथुरा कला को है। मथुरा कला से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुषाण युगीन मूर्तियाँ ब्राह्मण, जैन व बौद्ध धर्म के सम्मिश्रण तथा स्वदेशी एवं विदेशी कला के समन्वय के युग की देन है। धार्मिक सहिष्णुता का यह युग निश्चय ही कला को प्रोत्साहित करने वाला सिद्ध हुआ।

संदर्भ :
i. विद्यासागर उपाध्याय, भारतीय कला की कहानी, पृ॰ 66
ii.वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी, पृ॰ 222
iii.वही, पृ॰ 223
iv.श्रीमती कुसुम दास, भारतीय कला परिचय, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1977, पृ॰ 47
v.विद्यासागर उपाध्याय, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 66
vi.कृष्ण कुमार, प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 1998, पृ॰ 562
vii.प्रो॰ निरंजन सिंह योगमणी, प्राचीन भारत का साहित्यिक व सांस्कृतिक इतिहास, पृ॰ 338
viii.बृजभूषण श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1990, पृ॰ 327
ix.विद्यासागर उपाध्याय, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 67
x.कृष्ण कुमार, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 562
xi.N.P. Joshi, Mathura Sculptures, Sundeep Publication, New Delhi, p. 16
xii.ए॰ एल॰ बाशम, अद्भुत भारत, पृ॰ 264
xiii.विद्यासागर उपाध्याय, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 57
xiv.प्रो॰ निरंजन सिंह योगमणी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 336
xv.N.P. Joshi, op. cit., pp. 20-21.
xvi.डॉ॰ विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, भारतीय कला को बिहार की देन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1957, पृ॰ 103–04
xvii.V.A. Smith, The Jain Stupa of Mathura, p. 1-72.
xviii.बृजभूषण श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 324
xix.कृष्णदत्त वाजपेयी, मथुरा द मैकमिलन ऑफ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली, 1990, पृ॰ 49–50
xx.वासुदेव शरण अग्रवाल, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 240–42
xxi.बृजभूषण श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 333
xxii.वही, पृ॰ 327
xxiii.कृष्णदत्त वाजपेयी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 46–47
xxiv.विद्यासागर उपाध्याय, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 67
xxv.N.P. Joshi, op. cit., pp. 25-26.
xxvi.बृजभूषण श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 327
xxvii.वही, पृ॰ 311
xxviii.वासुदेव शरण अग्रवाल, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 271
xxix.बृजभूषण श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 331
xxx.वासुदेव शरण अग्रवाल, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 270
xxxi.कृष्णदत्त वाजपेयी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 48
xxxii.वासुदेव शरण अग्रवाल, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 271
xxxiii.कृष्णदत्त वाजपेयी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 562
xxxiv.बृजभूषण श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 333
xxxv.वही
xxxvi. कृष्णदत्त वाजपेयी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 52–53
xxxvii.वही, पृ॰ 49
xxxviii.बृजभूषण श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 332–33
xxxix.वही, पृ॰ 333–34
xl.वही, पृ॰ 323
xli.कृष्णदत्त वाजपेयी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 52
xlii.वासुदेव शरण अग्रवाल, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 252–254

डॉ॰ नरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक , दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय , कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

✶ International Scientific Journal Consortium
✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org